ध्येय पथ
सितम्बर २०२०

दादा भाई नौरोजी जयन्ती

प्रार्थना सभा

04 सितम्बर, 2020

दादा भाई नौरोजी जयन्ती

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में दादाभाई नौरोजी का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्हें लोग श्रद्धावश भारत के वयोवृद्ध नेता के नाम से स्मरण करते हैं। दादा भाई नौरोजी का जन्म महाराष्ट्र के खडक ग्राम में 4 सितम्बर 1825 ई. की एक निर्धन पारसी पुरोहित परिवार में हुआ था। बचपन में ही इनके पिता की मृत्यु हो गयी थी जिसके कारण इनका पालन–पोषण इनकी माता नानेकबाई ने किया। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई तथा उच्च शिक्षा बम्बई के एलफिंस्टन कालेज में। वह पहले भारतीय थे जो शिक्षा ग्रहण करने के बाद गणित और भौतिक विज्ञान के असिस्टेन्ट प्रोफेसर बने। उन्होंने अंग्रेजी के आर्थिक शोषण की नीति का कड़ा विरोध किया। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "ड्रेन आफ वेल्थ" के माध्यम से उन्होंने पहली बार भारत से धन के बर्हिगमन की बात जनता के सामने रखी। वह सदा ब्रिटिश सरकार पर जोर डालते रहे कि भारत में संवैधानिक सुधार लागू किये जायें तथा "फूट डालो और शासन करो" की नीति का परित्याग कर दिया जाय। दादा भाई सदैव नरम विचारों के ही पक्षपाती रहें। उन्होंने अंग्रेजी राज्य की आर्थिक शोषण की नीतियों को अनावृत्त किया और कहा कि बरतानिया हुकूमत दिन–प्रतिदिन भारत को लूटने में लगी है और इसी कारण देश निर्धनता की ओर अग्रसर होता जा रहा है। उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक Indian and Un-British Rule in India (1901) में प्रमाणिक तथ्यों से अपने उक्त सिद्धान्त को पुष्ट किया। उनके बारे में गोपाल कृष्ण गोखले ने तो यहाँ तक कहा था– "यदि मनुष्यों में कहीं देवता है तो वह दादा भाई ही है।

ऐसे महान व्यक्तित्व को उनके जन्म दिवस पर महाविद्यालय उन्हें अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन जयन्ती

प्रार्थना सभा

05 सितम्बर, 2020

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जयन्ती

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन दार्शनिक, विचारक और महान अध्यापक के रूप में विश्व प्रसिद्ध है। उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्ञान एवं दर्शन से पश्चिमी जगत को उसी की भाषा में परिचित कराया। स्वामी विवेकानन्द के बाद डॉ. राधाकृष्णन ने ही पूर्व और पश्चिम के बीच सेतु का काम किया।

राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को मद्रास के निकट तिरुत्तणी नामक गॉव में हुआ था। इनके पिता का नाम वीरस्वामी था जो पेशे से पुरोहित तथा शिक्षक थे। राधाकृष्णन की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही सम्पन्न हुई। उच्च शिक्षा के अंतर्गत इन्होंने मद्रास के क्रिश्चियन कालेज से एम.ए. की परीक्षा पास की। तदुपरान्त इन्होंने दर्शनशास्त्र की भी पढ़ाई की और प्रेसीडेन्सी कालेज में दर्शन विभाग में प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। आपने अनेक पुस्तकों की रचना की जिनमें – इंडियन फिलोसोफी, हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ, फ्यूचर आफ सिविलाइजेशन आदि प्रमुख हैं। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के ही कारण आपको आक्सफोर्ड वि.वि. (लन्दन) में अध्यापन कार्य के लिए सादर बुलाया गया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद आपके 1952 में भारत का उपराष्ट्रपति तथा 1962 ई. में भारत का प्रथम नागरिक अर्थात् राष्ट्रपति बनाया गया। वर्तमान रूस के साथ भारत का जो प्रगाढ़ मैत्री सम्बन्ध विश्व पटल पर परिलक्षित होता उसकी आधारशिला डॉ. राधाकृष्णन ने ही रखी थी। वे भारतीय राजनीति के दैदीप्यमान नक्षत्र थे। भारतीय राजनीति का यह चमकता सितारा 1975 ई. में इस लोक को छोड़कर परलोक सिधार गया। वे भारत की अमूल्य निधि थे। इसी कारण उन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से भी नवाजा गया। महाविद्यालय परिवार इनकी जयन्ती पर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

परमपूज्य राष्ट्र संत ब्रम्ह लीन महंत अवेद्य नाथ जी महाराज की पुण्य तिथि

प्रार्थना सभा

08 सितम्बर, 2020

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद को विराट एवं भव्य स्वरूप प्रदान करने वाले तथा महाराणा प्रताप महाविद्यालय के संस्थापक परमपूज्य राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की पुण्यतिथि के अवसर पर महाविद्यालय परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

महर्षि दधीचि जयन्ती

प्रार्थना सभा

06 सितम्बर, 2020

महर्षि दधीचि

(भाद्र शुक्ल अष्टमी)

महर्षि दधीचि भारत देश के एक महान ऋषि थे। वह शिव के परम भक्त एवं अंगिरा ऋषि के शिष्य थे। भारत जैसे धार्मिक देश में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को उनके जन्म दिवस के रूप मे मनाया जाता है। इनके सन्दर्भ में एक कथा विश्रुत (प्रसिद्ध) है कि वृत्रासुर नामक राक्षस ने देवताओं को पराजित कर स्वर्ग लोक पर अधिकार कर लिया था तब सभी देव मिलकर ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के सम्मुख गये तब उन्होंने सुझाया कि वृत्रासुर का अन्त किसी अस्त्र–शस्त्र से नहीं हो सकता। यदि पृथ्वी लोक के ऋषि दधीचि अपने अस्थियों का दान करें तो उससे बने शस्त्रों से वृत्रासुर मारा जा सकता है।

अतः दधीचि ऋषि ने देवताओं के कल्याण एवं वृत्रासुर के संहार के लिए अयनी अस्थियों का दान इन्द्र को किया जिससे इन्द्र ने वज्र बनाकर वृत्रासुर का अन्त किया। इस प्रकार यह कहा जाता है कि भारतीय वाग्ड्मय में देहदान की परम्परा महर्षि दधीचि के देहदान से ही भारतीय प्रारम्भ हुई।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जयन्ती

प्रार्थना सभा

09 सितम्बर, 2020

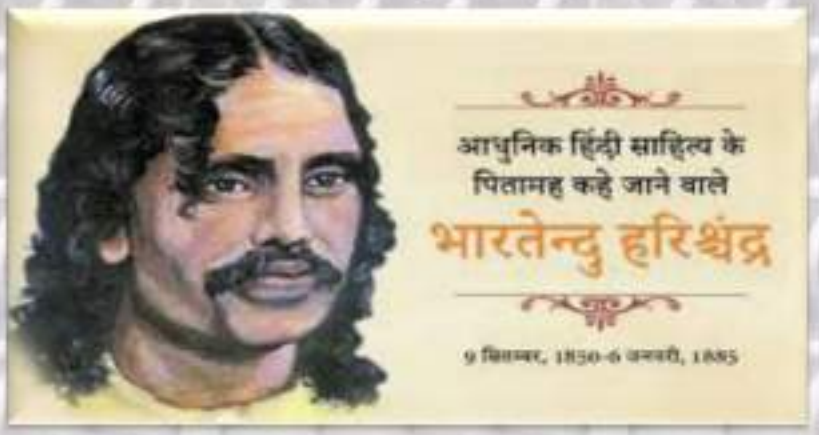

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म ९ सतम्बर १८५० को काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ। उनके पता गोपालचंद्र एक अच्छे क व थे और गरधरदास उपनाम से क वता लखा करते थे। १८५७ में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी आयु ७ वर्ष की होगी। ये दिन उनकी आँख खुलने के थे। भारतेन्दु का कृतित्व साक्ष्य है क उनकी आँखें एक बार खुलीं तो बन्द नहीं हुईं। उनके पूर्वज अंग्रेज भक्त थे उनकी ही कृपा से धनवान हुये थे। हरिश्चंद्र पाँच वर्ष के थे तो माता की मृत्यु और दस वर्ष के थे तो पता की मृत्यु हो गयी। इस प्रकार बचपन में ही माता पता के सुख से व ंचत हो गये। वमाता ने खूब सताया। बचपन का सुख नहीं मला। शक्षा की व्यवस्था प्रयापालन के लए होती रही। संवेदनशील व्यक्ति के नाते उनमें स्वतन्त्र रूप से देखने सोचने समझने की आदत का वकास होने लगा। पढ़ाई की वषय वस्तु और पद्धति से उनका मन उखड़ता रहा। क्वींस कॉलेज बनारस में प्रवेश लया तीन चार वर्षों तक कॉलेज आते जाते रहे पर यहाँ से मन बार बार भागता रहा। स्मरण शक्ति तीव्र थी ग्रहण क्षमता अद्भुत। इस लए परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते रहे। बनारस में उन दिनों अंग्रेजी पढे लखे और प्र सद्ध लेखक राजा शवप्रसाद सतारेहिन्द थे भारतेन्दु शष्य भाव से उनके यहाँ जाते। उन्हीं से अंग्रेजी सीखी। भारतेन्दु ने स्वाध्याय से संस्कृत मराठी बंगला गुजराती पंजाबी उर्दू भाषाएँ सीख लीं। उनको काव्य प्रतिभा अपने पता से वरासत के रूप में मली थी। उन्होंने पांच वर्ष की अवस्था में ही निम्न ल खत दोहा बनाकर अपने पता को सुनाया और सुक व होने का आशीर्वाद प्राप्त कया।

लै ब्योढा ठाढे भए श्री अनिरुद्ध सुजान।
बाणासुर की सेन को हनन लगे भगवान॥

धन के अत्य धक व्यय से भारतेंदु जी ऋणी बन गए और दुश्चिंताओं के कारण उनका शरीर श थल होता गया। परिणाम स्वरूप १८८५ में अल्पायु में ही मृत्यु ने उन्हें ग्रस लया। महा वद्यालय परिवार इनकी जयन्ती पर अपनी भावभीनी श्रद्धांज ल अ पत करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त जयन्ती

प्रार्थना सभा

10 सितम्बर, 2020

पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त

अपने संकल्प एवं साहस के लिए मशहूर गोविन्द वल्लभ पंत का जन्म 10 सितम्बर 1887 ई. में वर्तमान उत्तराखण्ड राज्य के अल्मोड़ा जिले के खूँट (धामस) नामक गांव में एक सम्मानित ब्राह्मण परिवार में हुआ था।

पंत जी पेशे से वकील थे तथा उनके वकालत की काशीपुर में धाक थी और उनकी आय 500 रूपये मासिक से भी अधिक थी। काशीपुर कुमायूँ के अन्य नगरों की अपेक्षा अधिक जागरूक था। 1916 में कुमायूँ में सबसे पहले निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा लागू करने का श्रेय इन्हीं को है। कुमायूँ में राष्ट्रीय आन्दोलन के सूत्रधार पंत जी ही थे। अपनी राजनीतिक गतिविधियों के कारण ही यह इतने प्रसिद्ध हो गये कि 1934 में रूहेलखण्ड–कुमायूँ क्षेत्र से केन्द्रीय विधान सभा के लिए निर्विरोध चुन लिये गये। 17 जुलाई 1937 को ये संयुक्त प्रान्त के प्रथम मुख्यमंत्री बने। पंत जी 1946 से 1954 तक उ0प्र0 के मुख्यमंत्री रहे। ये भूमि सुधारों में रूचि रखते थे। 1952 में इन्होंने जमीदारी उन्मूलन कानून को प्रभावी बनाया। पंत जी एक विद्वान कानून ज्ञाता होने के साथ ही महान नेता, महान देश भक्त, कुशल प्रशासक, सफल वक्ता, तर्क के धनी उदारमना पंत जी के जन्म दिवस को उनकी स्मृति के रूप में मनाया जाता है। इनके इन्हीं उपलब्धियों के लिए इन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया। महाविद्यालय परिवार अपने इस महानायक को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

महादेवी वर्मा पुण्यतिथि

प्रार्थना सभा

11 सितम्बर, 2020

महादेवी वर्मा

हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवियों में से एक हैं। इनका जन्म 26 मार्च, 1907 ई. को उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद नगर में हुआ था। यह अपने खानदान में 200 वर्षों की 7 पीढ़ियों में पहली पुत्री हुई थी। इससे प्रसन्न होकर इनके बाबा बाँके बिहारी ने इनका नाम 'महादेवी' रखा।

यह छायावादी युग के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त निराला, सुमित्रानन्दन पंत के साथ प्रमुख स्तम्भ के रूप में जानी जाती हैं। इन्हें आधुनिक 'मीरा' कहा गया है। वह साहित्यकार, संगीतकार, कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक के रूप में भी जानी जाती हैं। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक निर्भरता के लिए बहुत काम किया। उनकी रचनाओं में पीड़ा, वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य साहस, रोष, समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है। इनके काव्य संग्रहों में नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य गीत, दीप शिखा एवं यामा तथा गद्य रचनाएँ मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं, जिनके लिए यह जानी जाती हैं।

यामा एवं दीपशिखा के लिए उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा गया। इसके साथ हीं उन्हें पदमभूषण एवं पदमविभूषण पुरस्कार प्राप्त हुए। 11 सितम्बर, 1987 को उनका देहावसान हो गया तब से उनकी स्मृति में प्रत्येक वर्ष 11 सितम्बर स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है। महाविद्यालय परिवार उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

आचार्य विनोबा भावे जयन्ती

प्रार्थना सभा

11 सितम्बर, 2020

आचार्य विनोबा भावे

विनोबा भावे का मूल नाम विनायक नरहरि भावे था। महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में एक गांव है, गागोदा। यहां के चितपावन ब्राह्मण थे, नरहरि भावे, गणित के प्रेमी और वैज्ञानिक सूझबूझ वाले। रसायन विज्ञान में उनकी रुचि थी। उन दिनों रंगों को बाहर से आयात करना पड़ता था। नरहरि भावे रात-दिन रंगों की खोज में लगे रहते. बस एक धुन थी उनकी कि भारत को इस मामले में आत्मनिर्भर बनाया जा सके। उनकी माता रुक्मिणी बाई विदुषी महिला थीं। उदार-चित, आठों याम भक्ति-भाव में डूबी रहतीं. इसका असर उनके दैनिक कार्य पर भी पड़ता था। पूरा घर भक्ति रस से सराबोर रहता था। इसलिए इन छोटी-मोटी बातों की ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता था। उसी सात्विक वातावरण में 11 सितंबर 1895 को विनोबा का जन्म हुआ। उनका बचपन का नाम था विनायक, मां उन्हें प्यार से विन्या कहकर बुलातीं. विनोबा के अलावा रुक्मिणी बाई के दो और बेटे थे: बाल्कोबा और शिवाजी. विनायक से छोटे बाल्कोबा, शिवाजी सबसे छोटे. विनोबा नाम गांधी जी ने दिया था। विनोबा को अध्यात्म के संस्कार देने, उन्हें भक्ति-वेदांत की ओर ले जाने में, बचपन में उनके मन में संन्यास और वैराग्य की प्रेरणा जगाने में उनकी मां रुक्मिणी बाई का बड़ा योगदान था। बालक विनायक को माता-पिता दोनों के संस्कार मिले। गणित की सूझ-बूझ और तर्क-सामर्थ्य, विज्ञान के प्रति गहन अनुराग, परंपरा के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तमाम तरह के पूर्वाग्रहों से अलग हटकर सोचने की कला उन्हें पिता की ओर से प्राप्त हुई। जबकि मां की ओर से मिले धर्म और संस्कृति के प्रति गहन अनुराग, प्राणीमात्र के कल्याण की भावना, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, सर्वधर्म समभाव, सहअस्तित्व और समसम्मान की कला. आगे चलकर विनोबा को गांधी जी का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी माना गया। आज भी कुछ लोग यही कहते हैं। मगर यह विनोबा के चरित्र का एकांगी और एकतरफा विश्लेषण है। वे गांधी जी के 'आध्यात्मिक उत्तराधिकारी' से बहुत आगे, स्वतंत्र सोच के स्वामी थे। मुख्य बात यह है कि गांधी जी के प्रखर प्रभामंडल के आगे उनके व्यक्तित्व का स्वतंत्र मूल्यांकन हो ही नहीं पाया। महाविद्यालय परिवार इनकी जयन्ती पर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

गुरु नानक देव पुण्य तिथि

प्रार्थना सभा

12 सितम्बर, 2020

गुरूनानक देव पुण्य तिथि

क्रान्तिदर्शी प्रचण्ड रूढ़िवाद विरोधी एवं युग पुरूष गुरूनानक का आविर्भाव उस समय हुआ जब देश में मुसलमानों का राज्य पूर्ण रूप से स्थापित हो चुका था। सभ्यता के ऐसे अंधकार युग में पंजाब के गुजरानवाला जिले में रावी नदी के किनारे तलवंडी ग्राम में गुरू नानक का जन्म कार्तिक पूर्णिमा (नवम्बर 1469) को एक खत्री परिवार में हुआ था। इनके पिता मेहता कालू चन्द खत्री बुलार नामक एक जागीदार की सेवा में थे। नानक को सात वर्ष की आयु में हिन्दी तथा संस्कृत के अध्ययन हेतु पाठशाला भेजा गया। नानक बाल्यकाल से ही अत्यन्त साधु स्वभाव के बालक थे। इनका विवाह 18 वर्ष की आयु में सुलाखिन नामक एक कन्या से कर दिया गया, जिससे श्रीचन्द तथा लक्ष्मीदास नामक दो पुत्रों का जन्म हुआ। कबीर की भांति नानक का मन भी गृहस्थ जीवन में न लगा और नानक ने तीस वर्ष की आयु में (1499 ई.) राजकीय सेवा तथा घर त्याग कर संन्यास ग्रहण कर लिया। नानक एकेश्वरवादी थे। इन्होने मूर्तिपूजा तथा बाह्य आडम्बरों का खण्डन किया। इनकी शिक्षाओं एवं उपदेशों की ओर लोग आकृष्ट हुए और इनको अपना गुरू स्वीकार किया। इनके अनुयायी सिख कहलाये। महाविद्यालय परिवार इनकी पुण्यतिथि पर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

जतीन्द्रनाथ दास पुण्यतिथि

प्रार्थना सभा

13 सितम्बर, 2020

जतीन्द्रनाथ दास

(1904–1929)

जतीन्द्रनाथ दास का जन्म 27 अक्टूबर 1904 ई. में कलकत्ता में हुआ था। इन्होंने स्नातक की शिक्षा कलकत्ता के विद्यासागर कालेज से 1925 ई. में प्राप्त किया। कालेज के दौरान ही इन्होंने अनुशीलन समिति की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। जतीन्द्रनाथ जिस समय कालेज में पढ़ रहे थे उस समय से ही उन्होंने राजनीति के क्षेत्र में और समाज सेवक के रूप में काम करना प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने कार्य करने के लिए भवानीपुर में एक संस्था की स्थापना की। उनका सम्बन्ध उत्तर प्रदेश और पंजाब के क्रांतिकारी युवकों से भी था। उन्हें लाहौर षड़यंत्र केस में गिरफ्तार किया गया। जेल में यूरोपियन और भारतीय अपराधियों से भेद–भाव के कारण जेल अधिकारियों से उनके मतभेद उभरे और उन्होंने भूख हड़ताल प्रारम्भ कर दी। दो महीने (अर्थात 63 दिन) तक लगातार भूख हडताल करने के कारण उनका स्वर्गवास 13 सितम्बर 1929 ई. हो गई। कलकत्ता में उनके पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शन के लिए छः लाख लोगों की भीड़ जमा हुई। उनके इस बलिदान के कारण सारे भारत में उनका नाम आज भी बड़े आदर से लिया जाता है। महाविद्यालय परिवार उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

हिन्दी दिवस के अवसर पर एक दिवसीय ऑनलाइन व्याख्यान

14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन विशिष्ट व्याख्यान में प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

क्षेत्रीय केन्द्र कोलकाता के प्रभारी डॉ० सुनील कुमार सुमन ने व्याख्यान प्रस्तुत किया । कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्‌बोधन एवं आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार रॉव ने तथा कार्यकम का संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा स्वागत सम्मान हिन्दी विभाग की प्रवक्ता डॉ० सुधा शुक्ला ने किया।

एम विश्वेश्वरैया जन्मदिवस

प्रार्थना सभा

15 सितम्बर, 2020

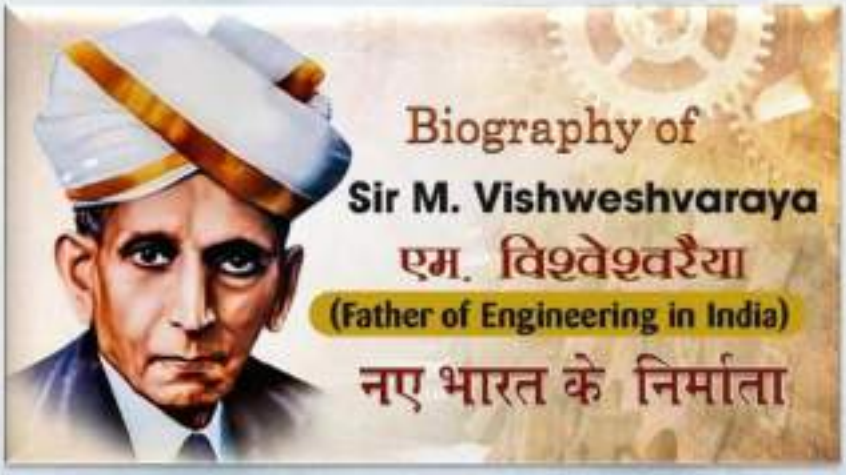

मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैया

सर डाक्टर मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरैया का जन्म 15 सितम्बर 1860ई. को एक तेलगू ब्राम्हण परिवार मोक्षगुण्डम श्रीनिवास शास्त्री एवं वेंकटलक्ष्माम्मा के यहाँ वर्तमान कर्नाटक राज्य के चिकमंगलूर जिले के मुद्डेनहल्ली ग्राम में हुआ था। इनके पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। लेकिन अपनी प्रतिभा के बल पर इन्होंने बम्बई विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। बम्बई सरकार ने उन्हें सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त कर दिया। उनका विशेष कार्य जिसके लिए वे याद किये जाते हैं, वह बड़े शहरों में जल की आपूर्ति करना था। सिन्ध जो उस समय बम्बई प्रान्त में था। वहाँ सदैव जल आपूर्ति की समस्या बनी रहती थी, उस समस्या के समाधन के लिए उन्होंने वहाँ सक्खर बाध बनाकर इस समस्या को हल किया। इस कार्य से वे समस्त भारत में प्रसिद्ध हो गये। अतः उन्हें पदोन्नत करके सुपरिटेण्डिंग इंजीनियर बना दिया गया। उन्होंने पूना, मैसूर, कराची, बड़ोदा, ग्वालियर, इन्दौर, कोल्हापुर, सांगली, सूरत, नासिक, नागपुर, धारवाड़, बीजापुर आदि अनेक नगरों की जल की समस्याओं को सुलझाया।

1912–1918 के बीच लगभग 7 वर्षों तक वह मैसूर के दीवान भी रहे तथ हैदराबाद के निजाम के कहने पर इस इलाके की मूसी नदी की बाढ़ एवं उसके कारण उत्पन्न जलसंकट का हल निकाला। इसके साथ ही कावेरी नदी पर कृष्णराज सागर बाँध बनाकर सिंचाई के लिए पानी और जल शक्ति से बिजली पैदा करने की व्यवस्था की जल शक्ति से बिजली पैदा करने का भारत में यह पहला प्रयत्न था।

उनके द्वारा किये गये लोक सेवा के लिए उन्हें किंग जार्ज पंचम ने नाइट की उपाधि दी। वह भारत के प्रारम्भिक इंजीनियर थे। उनके जन्म दिवस 15 सितम्बर को उनके कृत कार्यों के कारण "इंजीनियर्स डे" के रूप में मनाया जाता है। महाविद्यालय परिवार उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

विश्व ओजोन संरक्षण दिवस

प्रार्थना सभा

16 सितम्बर, 2020

विश्व ओजोन दिवस "16 सितम्बर"

ओजोन एक हल्के नीले रंग की गैस होती है जो वायुमण्डल के बाहरी परत पर एक आवरण का काम करती है। यह गैस सूर्य से निकलने वाले पराबैंगनी किरणों के लिए एक अच्छे फिल्टर का काम करती है। यह इस परत को नष्ट या पतला कर रही है। पराबैंगनी किरणें सूर्य से पृथ्वी पर आने वाली एक किरण है, जिसमें ऊर्जा ज्यादा होती है। पराबैंगनी किरणों की बढ़ती मात्रा से चर्म कैंसर, मोतियाबिंद के अलावा शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। यही नहीं इसका असर जैविक विविधता पर भी पड़ता है और कई फसले नष्ट हो सकती है।

ओजोन परत के इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए पिछले दो दशक से इसे बचाने के लिए मुहिम छेड़ी गई है। लेकिन 23 जनवरी, 1995 को यूनाइटेड नेशब की आम सभा में पूरे विश्व में इसके प्रति लोगों में जागरूकता, लाने के लिए 16 सितम्बर को अंतर्राष्ट्रीय ओजोन दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया और उस समय लक्ष्य रखा गया किया कि पूरे विश्व में 2010 तक इको फ्रेंडली वातावरण का सृजन किया जाएगा।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

विश्वकर्मा जयन्ती

प्रार्थना सभा

17 सितम्बर, 2020

विश्वकर्मा पूजा

हिन्दू धर्म में विश्वकर्मा निर्माण एवं सृजन के देवता माने जाते हैं। ऐसी मान्यता कि सोने की लंका का निर्माण इन्होंने ही किया था। इनके विषय में अनेकों भ्रांतियां कुछ अंगिरा पुत्र सुन्धवा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं तो कुछ भुवन पुत्र भौवन विश्वकर्मा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं। परन्तु महाभारत के खिल भाग सहित सभी पुराणकार प्रयास पुत्र विश्वकर्मा को आदि विश्वकर्मा मानते हैं।

जिस प्रकार भारत में विश्वकर्मा को शिल्पशास्त्र का आविष्कार करने वाला देवता माना जाता है और सभी कारगर उनकी पूजा करते हैं, उसी प्रकार चीन में लु पान को बढ़इयों का देवता माना जाता है।

हमारी भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत शिल्प संकायों, कारखानों, उद्योगो में भगवान विश्वकर्मा की महत्ता को प्रगट करते हुए प्रत्येक वर्ष भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा कन्या की संक्रान्ति (17 सितम्बर) को विश्वकर्मा पूजा पर्व के रूप में मनाया जाता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं ग्रामीण भारत का भविष्य विषय पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम

22 सितम्बर को उन्नत भारत अभियान के तत्वाधान में ऑनलाइन व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में दिग्विजय नाथ पी ० जी ० कॉलेज के बी०एड० विभाग के प्रवक्ता डॉ० राजशरण शाही ने 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं ग्रामीण भारत का भविष्य ' विषय पर उद्बोधन दिया । कार्यक्रम का संचालन हिन्दी विभाध्यक्ष डॉ० आरती सिंह, आभार ज्ञापन समाजशास्त्र विभाग के प्रवक्ता डॉ० बृजभूषण लाल तथा कार्यक्रम का संयोजन प्रभारी उन्नत भारत अभियान श्रीमती कविता मन्ध्यान ने किया।

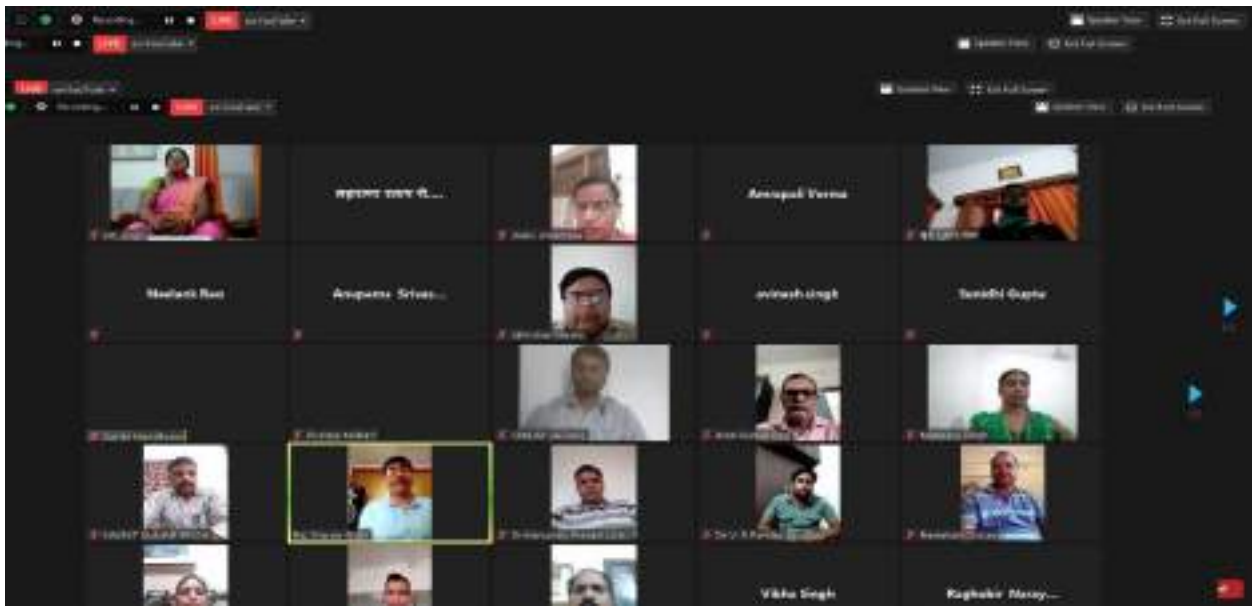

भीकाजी कामा जयन्ती

प्रार्थना सभा

24 सितम्बर, 2020

भीकाजी कामा

भीकाजी कामा का जन्म 24 सितम्बर 1861 को बम्बई में एक पारसी परिवार में हुआ था। उनमें लोगों की मदद और सेवा करने की भावना कूट-कूट कर भरी थी। वर्ष 1896 में मुम्बई में प्लेग फैलने के बाद भीकाजी ने इसके मरीजों की सेवा की थी। बाद में यह खुद भी इस बीमारी की चपेट में आ गई थीं। इलाज के बाद वह ठीक हो गई थीं लेकिन उन्हें आराम और आगे के इलाज के लिए यूरोप जाने की सलाह दी गई थी। वर्ष 1902 में यह इसी सिलसिले में लंदन गईं और वहां भी उन्होंने भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के लिए काम जारी रखा। भीकाजी कामा ने 22 अगस्त 1907 को जर्मनी में हुई इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांफ्रेंस में भारतीय स्वतंत्रता के ध्वजभारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज को बुलंद किया था। उस सम्मेलन में उन्होंने भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त करने की अपील की थी। उनके तैयार किए गए झंडे से काफी मिलते-जुलते डिजायन को बाद में भारत के ध्वज के रूप में अपनाया गया। राणाजी और कामाजी द्वारा निर्मित यह भारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज आज भी गुजरात के भावनगर स्थित सरदारसिंह राणा के पौत्र और भाजपा नेता राजुभाई राणा (राजेन्द्रसिंह राणा) के घर सुरक्षित रखा गया है। वह अपने क्रांतिकारी विचार अपने समाचार-पत्र 'वंदेमातरम्' तथा 'तलवार' में प्रकट करती थीं। श्रीमती कामा की लड़ाई दुनिया-भर के साम्राज्यवाद के विरुद्ध थी। वह भारत के स्वाधीनता आंदोलन के महत्व को खूब समझती थीं, जिसका लक्ष्य संपूर्ण पृथ्वी से साम्राज्यवाद के प्रभुत्व को समाप्त करना था। उनके सहयोगी उन्हें भारतीय क्रांति की माता मानते थे, जबकि अंग्रेज उन्हें कुख्यात महिला, खतरनाक क्रांतिकारी, अराजकतावादी क्रांतिकारी, ब्रिटिश विरोधी तथा असंगत कहते थे। यूरोप के समाजवादी समुदाय में श्रीमती कामा का पर्याप्त प्रभाव था। यह उस समय स्पष्ट हुआ जब उन्होंने यूरोपीय पत्रकारों को अपने देश-भक्तों के बचाव के लिए आमंत्रित किया। वह 'भारतीय राष्ट्रीयता की महान पुजारिन' के नाम से विख्यात थीं। फ्रांसीसी अखबारों में उनका चित्र जोन ऑफ आर्क के साथ आया। यह इस तथ्य की भावपूर्ण अभिव्यक्ति थी कि श्रीमती कामा का यूरोप के राष्ट्रीय तथा लोकतांत्रिक समाज में विशिष्ट स्थान था। भीकाजी द्वारा लहराए गए झंडे में देश के विभिन्न धर्मों की भावनाओं और संस्कृति को समेटने की कोशिश की गई थी। उसमें इस्लाम, हिंदुत्व और बौद्ध मत को प्रदर्शित करने के लिए हरा, पीला और लाल रंग इस्तेमाल किया गया था। साथ ही उसमें बीच में देवनागरी लिपि में वंदे मातरम लिखा हुआ था। महाविद्यालय परिवार इनकी जयन्ती पर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्थापना दिवस पर ऑनलाइन व्याख्यान कार्यक्रम

24 सितम्बर को राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्थापना दिवस के अवसर पर ऑनलाइन व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव के स्वागत उद्‌बोधन से हुआ । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ० एस० एन सुब्बाराव, वक्ता के रुप में दीनदयाल

उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, अंग्रेजी विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष, प्रो० विनोद सोलंकी तथा उन्नत भारत अभियान की परियोजना वैज्ञानिक सुश्री मानवीय अंजीत सिंह ने विचार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ट कार्यक्रम अधिकारी श्री बृजभूषण लाल एवं आभार ज्ञापन कार्यक्रम अधिकारीश्रीमती साधना सिंह ने किया।

दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती

प्रार्थना सभा

25 सितम्बर, 2020

दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती

प्रखर राष्ट्रवादी, महान विचारक एवं युग चिन्तक पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के नंगलाचन्द्रीभान गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय था। इनकी माता का नाम राम प्यारी देवी था। 3 वर्ष की उम्र में ही दीनदयाल उपाध्याय जी के पिता तथा 8 वर्ष की उम्र में माता का देहान्त हो गया। प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा घर पर ही हुई तथा पिलानी, आगरा तथा प्रयाग से इन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। बी. एस–सी. तथा बी.टेक की उपाधि ग्रहण करने के बाद भी दीनदयाल उपाध्याय जी ने देश सेवा के लिए अंग्रेजी सरकार द्वारा दी गयी नौकरी छोड़कर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से सम्मिलित हो गये। छात्र जीवन से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सक्रिय रुप से जुड़े थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1951 ई. में अखिल भारतीय जनसंघ का निर्माण होने पर उसके मंत्री बनाये गये। तदुपरान्त जनसंघ के महामंत्री भी निर्वाचित हुए और 15 वर्षों तक इस पद पर कार्य करते रहे। 1967 ई. में हुए कालीकट अधिवेशन में जनसंघ के अध्यक्ष बने। अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में जनसंघ को और अधिक मजबूत एवं सुदृढ बनाया। 11 फरवरी 1968 ई. में मात्र 52 वर्ष की अवस्था में दीनदयाल उपाध्याय जी का स्वर्गवास हो गया।

माँ भारती के ऐसे सुयोग्य सपूत, एकात्म मानवतावाद, चिन्तक – विचारक दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

महात्मा गाँधी जी की150 वीं जयन्ती वर्ष व पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शताब्दी जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में एकदिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी

25 सितम्बर को बी0एड0 विभाग के तत्वाधान में महात्मा गाँधी जी की 150 वीं जयन्ती वर्ष व पंडित दीनदयाल उपाध्याय के शताब्दी जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में एकदिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय के बी०एड० विभाग की विभागाध्यक्ष श्रीमती शिप्रा सिंह के स्वागत उद्बोधन से हुआ । तत्पश्चात् मुख्य अतिथि प्रो० कल्पता पाण्डेय (कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय बलिया) ने महात्मा गाँधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय की बुनियादी शिक्षा और नई शिक्षा नीति पर विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव ने किया।

ईश्वरचन्द विद्यासागर जयन्ती

प्रार्थना सभा

26 सितम्बर, 2020

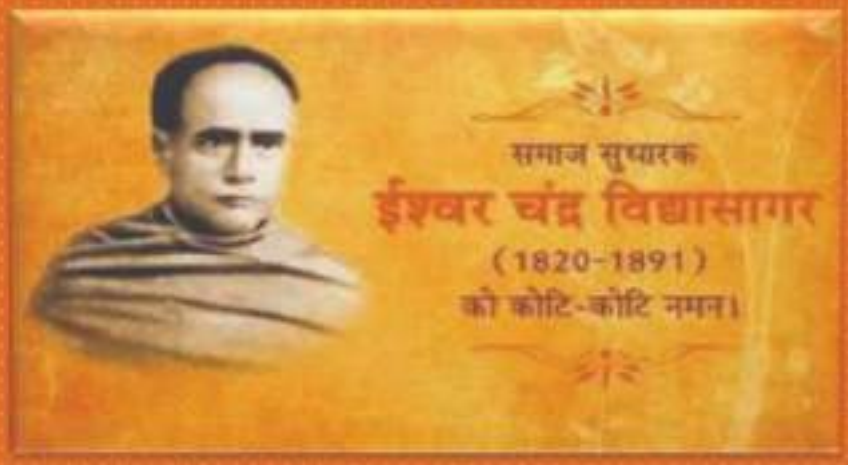

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जयन्ती

अनमोल्य प्रतिभा के धनी भारत के महान समाज सुधारक का जन्म बिहार के करमटाड़ा नामक स्थान पर 26 सितम्बर 1820 ई0 को हुआ था। इनके बचपन का नाम ईश्वरचन्द बंदोपाध्याय था। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर उच्च कोटि के विद्वान थे। इनकी विद्वता के कारण ही लोगों ने इन्हें विद्यासागर की उपाधि से सुशोभित किया। बंगाल के पुर्नजागरण में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर आधार स्तम्भ माने जाते हैं और नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। ईश्वर चन्द विद्यासागर के सफल प्रयासों के कारण बिहार तथा बंगाल में अनेक बालिका विद्यालयों की स्थापना सम्भव हो पाई। विद्वान होने के साथ-साथ ईश्वर चन्द्र विद्यासागर एक महान समाज-सुधारक भी थे। तत्कालीन समाज में कई कुरीतियाँ जैसे बाल-विवाह, सती प्रथा आदि व्याप्त हो गई थी, साथ ही साथ समाज में विधवाओं की स्थिति भी अत्यन्त शोचनीय थी। ऐसी स्थिति में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने समाज को सुधारने के क्रम में बाल विवाह पर पाबंदी तथा विधवा विवाह का उद्घोष किया। इन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह भी एक विधवा से ही कराया। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने स्त्री शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये खुद अपने खर्चे पर कई विद्यालयों की स्थापना करवाई। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर एक महान दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री, लेखक, उद्यमी एवं मानवतावादी इंसान थे। उन्होंने खुद लगभग 52 ग्रन्थों की रचना की।

भारत के इस महान विभूति की मृत्यु 29 जुलाई 1891 ई0 को हो गई। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जैसे महापुरूष के पावन जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय परिवार अपनी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करता है।

ॐ

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

राजाराम मोहनराय पुण्यतिथि

प्रार्थना सभा

27 सितम्बर, 2020

राजाराम मोहन राय

27 सितम्बर (पुण्यतिथि)

प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक, भारत मे सामाजिक पुर्नजागरण के प्रणेता तथा मानवता के अग्रदूत राजाराम मोहन राय का जन्म 22 मई 1774 ई. मे बंगाल के वर्दवान जिले के राधानगर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता बंगाल के नवाब की सेवा मे थे जिन्हें राय रायन की उपाधि मिली थी। 12 वर्ष की अवस्था मे राजाराम मोहन राय फारसी एवं अरबी पढ़ने के लिए पटना गये। राजाराम मोहन राय बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि व विद्रोही स्वभाव में थे। अपने विचारों के कारण इन्हें अपने कट्टरपंथी परिवार से बाहर निकाल दिया गया। कुछ समय तक वे इधर–उधर भटकते रहे तथा इस दौरान अंग्रेजी, फारसी, फ्रेन्च, लैटिन, जर्मन व हिब्रू भाषायें सीखी। राजाराम मोहन राय में एक महान सुधारक का अदम्य उत्साह और शक्ति थी। वे बाधाओं से डरने वाले नही थे। इन्होंने 20 अगस्त 1828 ई. को ब्रह्म समाज की स्थापना की। इस सभा के प्रथम सचिव ताराचन्द चक्रवर्ती थे। ब्रह्म समाज के सभी सदस्य प्रत्येक शनिवार को एकत्रित होते थे, जहाँ एकत्रित भीड़ को उपनिषदों का पाठ पढ़ाया जाता था।

राजाराम मोहन राय एक महान धर्म सुधारक, प्रखर राजनीतिक विचारक, महान शिक्षाशास्त्री और अप्रतिम देशभक्त थे। वे धार्मिक सहिष्णुता एवं स्वतंत्रता के पुजारी थे। राजाराम मोहन राय के जन्म शताब्दी समारोह मे श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था। राम मोहन हमारे इतिहास के आधुनिक युग मे अवतरित हुए जिस समय भारतीयों और विदेशियो मे भेदभाव की भाषा नही थी, फिर भी उस समय उन्होंने यह महसूस किया कि उस समय की सबसे बड़ी चुनौती एकता की थी। उनके हृदय मे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी के लिये जगह थी। वस्तुतः उनकी आत्मा भारत की आत्मा थी। माँ भारती के इस महान सपूत का 27 सितम्बर, 1833 को देहावसान हो गया। ऐसे महान व्यक्तित्व को उनकी पुण्यतिथि पर महाविद्यालय परिवार उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

सरदार भगत सिंह जयन्ती

प्रार्थना सभा

28 सितम्बर, 2020

सरदार भगत सिंह

भगत सिंह भारत के एक महान स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी थे। इनका जन्म 28 सितम्बर 1907 ई० को हुआ था इनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह संधू और माता का विद्यावती कौर था। ये एक जाट परिवार से थे। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आज़ादी के लिये नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर इन्होंने देश की आज़ादी के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुक़ाबला किया। काकोरी काण्ड में राम प्रसाद बिस्मिल सहित 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि पण्डित चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड गये और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर 17 दिसम्बर 1928 को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज़ अधिकारी जे० पी० सांडर्स को मारा था। क्रान्तिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने वर्तमान नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेण्ट्रल एसेम्बली के सभागार संसद भवन में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज़ सरकार को जगाने के लिये बम और पर्चे फेंके थे। बम फेंकने के बाद वहीं पर दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी। जेल में भगत सिंह करीब 2 साल रहे। जेल में भगत सिंह व उनके साथियों ने 64 दिनों तक भूख हडताल की। 23 मार्च 1931 को शाम में करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी गई। ऐसे महान व्यक्तित्व को महाविद्यालय परिवार हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर